Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

आधुनिक नगर नियोजन में भौगोलिक कचरा प्रबंधन का मानक सौन्दर्य: रॉक गार्डन

हरे राम सिंह

पी.एच्.डी, भूगोल विभाग, बी.एन.एम.यू, मधेपुरा, बिहार, भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 6
Page Number: 12-15
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 10 Nov 2020
Published : 20 Nov 2020

सारांश - सामान्य तौर पर रॉक गार्डन का निर्माण एक प्लान का हिस्सा होता है जिसमें राकिंग–प्लेस, रॉक का चयन, रॉक प्राप्ति स्थल, संबंधित पौधे, मिट्टी की तैयारी, आदि करनी पड़ती है। यह अपने तरह का प्रथम वैश्विक कार्य है जिसमे कबाड़ को भौगोलिक रूप से व्यवस्थित कर रचना कार्य में प्रयुक्त किया गया है। इसलिए यह एक मानक सौंदर्य का कसौटी है जो आधुनिक नगर नियोजन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कलाकार नेक चंद सैनी ने अपने ड्रीम प्रोजेक्ट रॉक गार्डन का निर्माण चण्डीगढ़, तलवाड़ा, दार्जिलिंग एवं मल्लमपुझा नामक जगहों पर किया है जो आधुनिक भारत के महत्वपूर्ण टूरिस्ट केन्द्र हैं।

मुख्य शब्द – भौगोलिक, कचरा प्रबंधन, मानक, सौन्दर्य, रॉक गार्डन, आधुनिक।

रॉक गार्डन चण्डीगढ़: रॉक गार्डन चण्डीगढ़ का निर्माण चरणबद्ध तरीके से हुआ। इसके तीन मुख्य चरण हैं जो इस प्रकार हैं–

क. प्रथम चरण: यह चरण 1956 में आरंभ हुआ और 1975 में पूरा हुआ। इस पार्क को 24 जनवरी, 1976 को उद्घाटन करते हुए जनता के लिए खोल दिया गया। इसका क्षेत्रफल 12 एकड़ है।

ख. दूसरा चरण: यह चरण 1976 में आरंभ हुआ। इस चरण का कार्य 1983 में पूरा हुआ।

ग. तीसरा चरण: यह चरण 1983 में आरंभ होकर 2003 में पूरा हुआ।

सुंदर मूर्ती, वास्तु पशु, पक्षी, झरना, झूला, महल, रानी, राजा, नाटक– टोलियाँ, चैपाल की महफिल, गीत गाती महिलाओं का झूण्ड, डोली के असवार, आकार पा रहे थे। उन्हीं कबाड़ों से जिसे समय–समय पर शहर भर से बीन– चुन उठाकर लाया गया था। कलाकार सैनी ने अपनी सायकिल पर सकेतड़ी, नेपली, कसौली की अनगिनत यात्रा की। हिमालय की तराई में नदियों की घाटियों से कुछ भी उन्हें काम लायक मिला, उसे अपनी सायकिल पर ढोकर लाया। अपने कला–सृजन में उनका उपयोग किया।

कलाविद नेक चंद सैनी ने रॉक गार्डन का कार्य पूरा हो जाने के बाद विविध राज्य सरकारों व संस्थाओं के आमंत्रण पर भिन्न–भिन्न जगहों पर लधु रॉक गार्डन का निर्माण किया।

नेक चन्द सैनी की कला अपने आप में अनुठा, अद्वितीय व लोक जीवन से जुड़ा भारतीय सामाजिक सभ्यता का सच्चा प्रतिबिंब है। यह आधुनिक भारत के नगर नियोजन में कचरा प्रबंधन का एक मानक है। इस विधि से कचरा प्रबंधन कर हम एक ओर जहाँ कचरा का निपटान करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने नगर नियोजन को कला की दृष्टि से सुन्दर व आकर्षक बनाते हैं। यह हमारे मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालता है। रॉक गार्डन की परिकल्पना भौगोलिक कचरा प्रबंधन का एक मानक है।

परिकल्पना- भारतीय कलाकर नेक चंद सैनी ने अपने रॉक गार्डन के निर्माण में रॉक के साथ–साथ ठोस कबाड़ का प्रयोग करते हुए एक बेमिसाल गार्डन की परिकल्पना किया। उसे चण्डीगढ़ (निर्माणाधीन शहर) के एक एकांत जंगल मे बिना किसी सरकारी सहायता व अनुमति के अपनी उद्यमशीलता से निर्मित किया।

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

रॉक गार्डन में निमार्ण सामग्री का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा पत्थर होते हैं। ये विविध साईज, सेप के होते हैं जिसे एक चतुर-कारीगर अपनी उद्यमशीलता से निर्मित करता है[1]। सामान्य तौर पर रॉक गार्डन का निर्माण एक प्लान का हिस्सा होता है जिसमें रॉकिंग-प्लेस, रॉक का चयन, रॉक प्राप्ति स्थल, संबंधित पौधे, मिट्टी की तैयारी, आदि करनी पड़ती है।

रॉक गार्डन के निमार्ण में स्थानीय स्रोत से सिरेमिक, चूड़िया, काँच, टयूब्स, फैक्ट्री से प्राप्त अवशिष्ट सीमेंट, अलकतरा के कनस्तर, जूट की बोरिया आदि का प्रयोग करते हुए स्थानीय भूदृश्य को ठीक प्रकार से लोक जीवन के अनूरूप सजाया है। नेक चंद सैनी के कला कर्म को रॉक गार्डन के रूप मे हम अवलोकन कर सकते हैं। इनके निर्मित गार्डन में कचरा का सही प्रबंधन हुआ है और उसमें सौंदर्य निखर आया है[2]। यह अपने तरह का प्रथम वैश्विक कार्य है जिसमे कबाड़ को भौगोलिक रूप से व्यवस्थित कर रचना कार्य में प्रयुक्त किया गया है। इसलिए यह एक मानक सौंदर्य का कसौटी है जो आधुनिक नगर नियोजन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कलाकार नेक चंद सैनी ने अपने ड्रीम प्रोजेक्ट रॉक गार्डन का निर्माण चण्डीगढ़, तलवाड़ा, दार्जिलिंग एवं मल्लमपुझा नामक जगहों पर किया है जो आधुनिक भारत के महत्वपूर्ण टूरिस्ट केन्द्र हैं।

रॉक गार्डन चण्डीगढ़: रॉक गार्डन चण्डीगढ़ का निर्माण चरणबद्ध तरीके से हुआ। इसके तीन मुख्य चरण हैं जो इस प्रकार हैं-

क. प्रथम चरण: यह चरण 1956 में आरंभ हुआ और 1975 में पूरा हुआ। इस पार्क को 24 जनवरी, 1976 को उद्घाटन करते हुए जनता के लिए खोल दिया गया3। इसका क्षेत्रफल 12 एकड़ है। इस चरण का कार्य जंगल के बीच गोपनीय तरीके से किया गया था। लगभग 18 वर्षों तक इस पर किसी सरकारी अधिकारी की नजर नहीं पड़ी थी।

ख. दूसरा चरण: यह चरण 1976 में आरंभ हुआ। इस चरण का कार्य 1983 में पूरा हुआ।

ग. तीसरा चरण: यह चरण 1983 में आरंभ होकर 2003 में पूरा हुआ।

(1) फोटो - नेक चन्द की कलाकृति

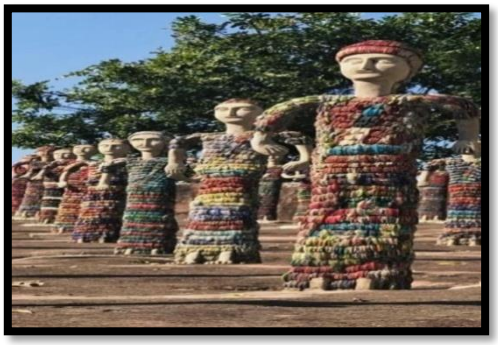

(2) फोटो - नेक चन्द की कलाकृति

तीनों चरणों का कार्य संपन्न होने के बाद इसका कुल विस्तार 40 एकड़ तक फैल गया4।

रॉक गार्डन चण्डीगढ़ का निर्माण नेक चंद सैनी का कला के क्षेत्र में किया गया सर्वाधिक उत्कृष्ट कार्य है। कला के क्षेत्र में स्थापित प्राचीन व आधुनिक शैलियों से अलग हटकर उन्होंने एक नई कला-विधा का जन्म दिया[5]। घर, बाजार, शहर, नदी, पहाड़, पोखर सभी जगह यह कलाकार यायावरी करता रहा। जहाँ कहीं उनके काम लायक कुछ मिल जाता, अपनी उस स्टूडियों में लाकर रखते जो जंगल के बीच घिरा था। एकदम निर्जन व सुनसान। मच्छरों के भिन-भिनाहट, काली अंधेरी रात में भी वैकल्पिक रौशनी का अलहदा व्यवस्था कर कलाकार अपने स्टूडियो में मग्न रहता था[6]। वे स्टूडियो के बाहर विविध जगहों से इकट्ठा किये गये चूड़ी, पत्थर, सिरेमिक, मोजाईक, कांच, घड़ा, टाईल्स, चीनावेयर, बेकेलाईट, बिजली का बल्ब, स्वीच, फ्यूज, प्लग, कटलरी, कपड़ों के कतरण, आदि का खजाना लाकर रखते थे[7]।

मच्छरों से बचने के लिए सीमेंट की जूट वाली बोरी को धोकर वह महान कलाकार ओढ़ लेता। रोशनी की कमी को टायर जलाकर पूरा कर लेता8। बारीक, बड़े अनगढ़, सुगढ़ सब तरह की सामग्री कलाकार के सधे हाथ से आकार पाते गये। बेजान कबाड़ में जान आते गई, सौंदर्य निखरता गया।

शहर व प्रकृति के बीच बिखरे कबाड़ ही उनके लिए कच्चा माल था। कबाड़ को जिसे दुनिया बेजान, बेकार, कुरूप समझ फेंक देती है, उन्हें उस कबाड़ में जीवन, उपयोगिता, सौंदर्य नजर आता था। कबाड़ में सौंदर्य को ढूंढ़ना व उसे उपयोगी ही नहीं आवश्यक आवश्यकता में बदल देना ही इस कलाकार का अभिष्ट था[9]।

धरती पर पहलीबार कोई कलाकार जन्म लिया था जो प्रकृति से अनन्त प्रेम करता था। वह पर्यावरण को बचाने का हिमायती था। शहर की कृत्रिमता में भी प्रकृति को बचाये बनाये रखने व उसे संवारने के लिए अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार था। अपनी नौकरी के बाद दिनभर की थकान से चूर इम्पलाई जब अपने स्टूडियो में पहँचता था तो उत्साह के कारण सारा थकान दूर हो जाता था। रात बारह- एक बजे तक कार्य करने के पश्चात् ही वह दम मारता[10]। रविवार व त्योहार की छुट्टियां उसके लिए उपहार होती। वे तब अपना पूरा समय कलाकृतियों के निर्माण को देते।

सुंदर मूर्ती, वास्तु पशु, पक्षी, झरना, झूला, महल, रानी, राजा, नाटक- टोलियाँ, चैपाल की महफिल, गीत गाती महिलाओं का झूण्ड, डोली के असवार, आकार पा रहे थे11। उन्हीं कबाड़ों से जिसे समय-समय पर शहर भर से बीन- चुन उठाकर लाया गया था। कलाकार सैनी ने अपनी सायकिल पर सकेतड़ी, नेपली, कसौली की अनगिनत यात्रा की। हिमालय की तराई में नदियों की घाटियों से कुछ भी उन्हें काम लायक मिला, उसे अपनी सायकिल पर ढोकर लाया। अपने कला-सृजन में उनका उपयोग किया।

इस निर्माणाधीन पार्क पर पहली बार 1975 में बाहरी दूनिया के किसी व्यक्ति की नजर पड़ी। चण्डीगढ़ प्रशासन के एक अफसर जो कि निकट हीं पी॰डब्लू॰डी॰ विभाग के डिपो पर आया था, उसने इसे देखा। उस ऑफिसर की पैनी नजरों ने नेक चंद सैनी की कला-संसार का मुआयना किया। विभाग को सूचित करते ही कि" चण्डीगढ़ नगर के सेक्टर एक में अवैध रूप से लगभग 12 एकड़ में निर्माण-कार्य किया गया है" हड़कम्प मच गया। यह अवैध निर्माण चण्डीगढ़ शहर के लिए बड़ी बात थी। पूरे चण्डीगढ़ का निर्माण ली कार्बुजीयर नाम के फ्रांसीसी इंजिनीयर की देख-रेख में हो रहा था। नक्शा से इतर एक भी निर्माण कार्य नहीं हो सकता था वहां एक रोड इंस्पेक्टर ने 12 एकड़ में अवैध-निर्माण कार्य कर डाला था[12]। समय-समय पर अफसरों का दल उस निर्माण के निरीक्षण के लिए आता रहा। सभी अपनी-अपनी निगाह व समझ से उन कलाकृतियों को देखते, जिसे उनके ही विभाग का एक रोड इंस्पेक्टर ने बनाया था।

अद्भूत आज के पार्क की तरह ही कला का एक बेमिशाल दुनियां सारी खुबियों से आच्छादित पुल, झरना, थियेटर, महल, बाग, चाहरदीवारी, तोरण सब कुछ इस पार्क में था और इसका निर्माण इसी शहर व आस-पास से लाये गये कबाड़ से किया गया था। कुछ ना नुकर के बाद अंतत: नगर निर्माण एडवाईजरी बोर्ड की सलाह पर इस पार्क को स्वीकार कर लिया गया13 व विधि पूर्वक जनता को समर्पित कर दिया गया।

24 जनवरी 1976 को जब चण्डीगढ़ की जनता इसे देखने पहुँची तो सभी आश्चर्यचकित थे। दुनियां का आठवां आश्चर्य "रॉक-गार्डन" उनके अपने शहर में था[14]।

शहर के वरिष्ठ हस्तियों की उपस्थिति में पार्क का उद्घाटन हुआ। इसके साथ ही कलाकार नेक चंद सैनी की कला-शिल्प का अवलोकन व मुल्यांकन का शिलशिला आरंभ हो गया।

मीडिया के माध्यम से विदेशी शैलानियों व कला प्रेमियों के बीच जब बात गई तो उन्होंने भी "वैज्ञानिक दृष्टि" से अवलोकन किया व इस पार्क के बारे में रिव्यू लिखा। किसी ने किताब लिखा, किसी ने लेख, किसी ने डाक्यूमेंट्री बनाई। लंदन में इस पार्क के दीवानों ने एक फाउंडेशन का निर्माण कर पाश्चात्य देशों में प्रचार-प्रसार का कार्य किया और इस नई कला- विधा जिसे उन्होंने "आउट साईडर आर्ट" नाम दिया था, का संरक्षण का दायित्व लिया।

कलाविद नेक चंद सैनी ने रॉक गार्डन का कार्य पूरा हो जाने के बाद विविध राज्य सरकारों व संस्थाओं के आमंत्रण पर भिन्न-भिन्न जगहों पर लधु रॉक गार्डन का निर्माण किया[15]। इनके हाथों बनाये लधु रॉक गार्डन का विवरण इस प्रकार है-

रॉक गार्डन तलवाडा- उन्होने इस पार्क का निर्माण 2005 में किया। यह पंजाब के होशियारपुर जिला में स्थित है। इसका उद्घाटन 2006 में किया गया। होशियारपुर से गुजरने वाले शैलानी कुछ देर रूक कर यहाँ समय बिताना आवश्यक समझते हैं। प्रकृति की गोद में बने पार्क में नेक चंद का नायाब कला-कौशल विषय-वस्तु को सजीवता प्रदान करते हैं[16]।

रॉक गार्डन दार्जिलिंग- इस पार्क का निर्माण बंगाल सरकार के प्रयास से दार्जिलिंग मुख्य नगर से दस कि॰ मी॰ की दूरी पर किया गया है। हिमालय की ढाल पर सर्पिली सड़कों के मोड़ों पर निर्मित किये गये पार्क को गोरखालैण्ड स्वायत्तपरिषद् के आंदोलन के दौरान काफी क्षति पहुँचाई गई थी। अनमोल कला धरोहरों को क्रूरता से निष्ट किया गया था।

रॉक गार्डन मल्लमपुझा- इस पार्क का निर्माण केरल के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के द्वारा पल्लकड़ जिले में किया गया है। यहाँ भी पार्क की कला शैली चण्डीगढ़ के पार्क की तरह हीं है। कबाड़ से निर्मित कला-कृतियाँ। प्रदर्शित बिंब केरल की स्थानीय संस्कृति के अनुरूप है। यहां की कला-कृतियों में नौकादौड़, युद्धनृत्य, हाथी, नारियल के पेड़, मछली, सागर तट आदि का अंकन सुन्दर तरीके की गई है। 1993-95 में निर्मत इस पार्क का उचित रख रखाव नहीं होने से कलाकृतियों को नुकसान हो रहा है[17]।

अन्य कला कर्म- उपरोक्त पार्को के अलावे कलाविद माननीय नेक चंद सैनी के बनाये स्टेच्यू व स्कल्पचर से मुम्बई, चण्डीगढ़ एयर पोर्ट व चण्डीगढ़ रेलवे स्टेशन को सजाया गया है। यहाँ आने वाला हर यात्री इसको देखने के बाद मंत्रमुग्ध हो जाता है। इन पंक्तियों के लेखक को सन्-2001 मे चण्डीगढ़ स्टेशन

पर जब ये कलाकृतियाँ दिखी थी तो कदम न सिर्फ रूक गये बल्कि उनकी ओर मुड़ भी गये थे। मैंने करीब जाकर इन मूर्तिशिल्पों को निहारा था। तब मोबाईल कैमरा के दौर नहीं थे और मैं इस याद को कैमरे की जगह मस्तिष्क में ही समेटे रहा। सैनी जी के कलाकर्म से यह मेरा पहला परिचय था। तब मैं इसके निर्माता को जानता भी नहीं था। उनको तो मैंने तब जाना जब 2009 की दिसम्बर के आखरी सप्ताह में रॉक गार्डन चण्डीगढ़ की यात्रा किया था।

निष्कर्ष – नेक चन्द सैनी की कला अपने आप में अनुठा, अद्वितीय व लोक जीवन से जुड़ा भारतीय सामाजिक सभ्यता का सच्चा प्रतिबिंब है। यह आधुनिक भारत के नगर नियोजन में कचरा प्रबंधन का एक मानक है। इस विधि से कचरा प्रबंधन कर हम एक ओर जहाँ कचरा का निपटान करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने नगर नियोजन को कला की दृष्टि से सुन्दर व आकर्षक बनाते हैं। यह हमारे मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालता है। रॉक गार्डन की परिकल्पना भौगोलिक कचरा प्रबंधन का एक मानक है।

संदर्भ सूची -

01. *Johan Maizels, Row Creation: Out Sider Art & Beyond, Phaidon Press 7.Nov.1996, P–49*
02. चंडीगढ़ प्रशासन स्मारिका पुस्तिका 2003, पृष्ट–26
03. *V.P Mehta, Rock Graden: A vision of creativity: Memories of Nekchand Arun Publishing, House 2010, P–7*
04. कालिया, आर.(1987) चण्डीगढ़ एक भारतीय शहर का निर्माण आक्सफोड इडिंया, पृष्ट–129
05. *Times Travel. Nov.22.2018.*
06. *tourmyindia.com*
07. *Chandigarh Travel Guide*
08. इंडियन एक्सप्रेस 28.11.2007
09. हिंदूस्तान टाईम्स 08.07.2007
10. *hyperallergic.com 4 May 2018*
11. *Nek Chand Foundation browser*
12. टाईम्स ऑफ इंडिया 15.11.2007
13. *Out sider Art Today June 2003*
14. न्यूयार्क टाईम्स 08.07.200.
15. *ARTCURIAL April 20, 2016*
16. सैनिक समाचार 15.10.2007